

फिर उठो वतन के वास्ते

देश के शहीदों एवं देशभक्तों (क्रांतिकारी बालिकाओं/महिलाओं सहित) को समर्पित

काव्य-संग्रह
Vol. I

डॉ. हरि जे. मंगलानी



रुकमणी कैरियर पब्लिकेशन्स

फिर

उठो वतन के वास्ते

देश के शहीदों एवं देशभक्तों (क्रांतिकारी बालिकाओं/महिलाओं सहित) को समर्पित

[राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, राज. राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
एवं अन्य समकालीन ऐतिहासिक एवं साहित्यिक स्त्रोतों पर आधारित]



डॉ. हरि. जे. मंगलानी
सेवानिवृत्त प्राचार्य, महाविद्यालय शिक्षा
एवं
पूर्व क्षेत्रीय समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना,
राजस्थान सरकार

RCP रुकमणी कैरियर पब्लिकेशन्स
जयपुर

प्रकाशक : RCP
रुकमणी कैरियर पब्लिकेशन्स
53/139, वी.टी. रोड, मानसरोवर, जयपुर।
मो. 9352966274
9314616931

मूल्य : 70/-

ग्राफिक्स : मारुति ग्राफिक्स, जयपुर

मुद्रक : रुचिका ऑफसेट, जयपुर

अनुक्रमणिका

❑❑❑

आत्म निवेदन

भारत सरकार द्वारा वर्ष १९९२ में मनाई गई स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में मेरे द्वारा लिखा गया काव्य संग्रह 'उठो वतन के वास्ते' रचा गया। १९९२ से आज तक कई राजनैतिक घटनाएँ आई जो उमड़-घुमड़ कर मेरे मस्तिष्क में समा गईं, इसकी परीणिति वर्तमान काव्य संग्रह है, जो नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापन में एक छोटा सा कंकड़ बने यही मेरा उद्देश्य है। इस ग्रन्थ में मैंने विनम्रता पूर्वक ईश्वर से प्रार्थना की है कि वह हमें सद्बुद्धि दें ताकि हम मंदिर मस्जिद के फेरों में न पड़कर अपने मुक्तिबोध के जीवन संघर्ष में सृजनात्मक कार्य में संलग्न हो जाएँ।

ईश्वर तो हर सच्ची राह में मिलेगा, अल्लाह तो हर सच्ची निगाह में मिलेगा,
इसे मंदिर-मस्जिद के फेरों में ना देखो, इसे गिरजे-गुरुद्वारों के डेरों में ना देखो।

नारी चेतना मेरे काव्य का एक मूल उद्देश्य रहा है। इसलिए सदियों पुराने नारी परिवेश को लेकर सती, दहेज, नारी उत्पीड़न आदि के विरुद्ध लिखकर मैंने शहीदी पथ पर उन बलिदानी नारियों का उल्लेख किया है जिनके नाम इतिहास के पृष्ठों से लुप्त हैं।

मेरे इस काव्य संग्रह में महामहिम राज्यपाल महोदया से प्राप्त संदेश के लिए मैं अपने हृदय की गहराइयों से उनका आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे अपने पूज्यनीय स्व. पिताश्री जेठानंद मंगलानी के आशीर्वाद के प्रतिफल के रूप में प्राप्त 'जे' शब्द मुझे मेरे जीवन में सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा है, और प्रेरणा देता रहेगा, इसलिए मैं सदैव उनका नमन करता हूँ। मैं अपनी जीवन संगिनी श्रीमति रुकमणी मंगलानी का हार्दिक स्नेह से आभार प्रकट करता हूँ जिसने मुझे काव्य संकलन लिखने के दौरान अपना पूरा सहयोग दिया। मेरे पुत्र तनुज मंगलानी एवं पुत्रवधु श्रीमति सोनिया (विनीका) मंगलानी के प्रयासों से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है, मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मेरी तीनों सुपुत्रियों (कु. नीलू, श्रीमति जया, श्रीमति तनिला (निधि) मोरानी एवं दामाद श्री हेमन्त ज्ञानी एवं प्रदीप मोरानी के सहयोग को भी सहारते हुए उनके प्रति स्नेहपूर्वक अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मेरी दोनों नातियों कनिका एवं खुशी की मुस्कराहटों से मिली प्रेरणा के लिए उन्हें स्नेह पूर्वक आशीर्वाद ।

पाठकों से मेरी प्रार्थना है कि वे इस काव्यग्रन्थ का अवलोकन कर अपनी राय से मुझे अवगत करवायें। मेरी इस काव्यात्मक सीढ़ी की ओर बढ़े कदमों को चाहें तो वे मुझे आगे बढ़ायें या फिर मुझे पीछे धकेल दें-आपका निर्णय सिर आंखों पर ।

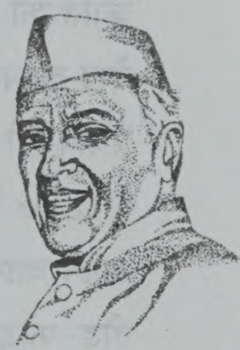
बुझाकर अपने आपको, मर मिटे जो वतन के खातिर
मुझे वो शहीदी फूल चुनने दो,
लुटाकर अपने आपको, मिट चुके जो वतन के खातिर
मुझे वो शहीदी असूल चुनने दो।

53/139, वी.टी. रोड, मानसरोवर, जयपुर।

-डॉ. हरि जे. मंगलानी

भारत छोड़ो आन्दोलन

भारत छोड़ो आन्दोलन ने 'करो या मरो' का नारा दिया था



आखिर २४ जुलाई ४२ को वर्धा कांग्रेस ने
भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव रखा था,
स्वीकार कर इसे ८ अगस्त ४२ को बम्बई कांग्रेस ने
एक बार फिर सत्य अहिंसा के दाव का प्रस्ताव रखा था।
प्रेरित होकर एक अवतारी शक्ति से, गांधी के निश्चय ने
उसी दिन 'करो या मरो' का नारा दिया था,
प्रेरित होकर गांधी से, कार्य समिति के प्रत्येक सदस्य ने
एक के बाद एक, नेता चुनने का सहारा लिया था।
देश के महान् सपूतों के इस निश्चय ने
फिरंगियों के मस्तिष्क को हिला दिया था,
शीघ्र फिरगिंयों के दमन चक्र के निश्चय ने
गांधी को ९ अगस्त को बंदी बना लिया था।
हुए न विचलित नेता फिरंगी जुल्म के मक्र से, अब सत्य अहिंसा की जय ने
मौलाना, नेहरू, घोष[१] को नया मंत्र दिला दिया था,
अब 'करो या मरो' के इस निश्चय ने
प्रसाद-पट्टाभि-पंत-महमूद-कृपलानी[२] को नया मंत्र थमा दिया था।
देख नेताओं के हौंसले बुलन्द फिरंगियों ने,
सभी नेताओं को बंदी बना लिया था,
देख फिरंगियों के ये जुल्म भारतियों ने
क्रांति को जटिल बना दिया था।

❑

स्त्रोतः डॉ. अम्बा प्रसाद, "दि इंडियन रिवोल्ट ऑफ 1942"

१. अबुल कलाम आजाद, पं. जवाहरलाल नेहरू, डॉ. प्रफुल्ल घोष कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य थे।

२. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पट्टाभि सीतारमैया, जी.बी. पंत, डॉ. सैयद महमूद एवं आचार्य कृपलानी- ये भी कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य थे।

पर दबी न क्रांति की ज्वाला, अब क्रांति प्रकाश[३] ने
क्रांति चक्र चलाने हेतु अपना रथ क्रान्ति पथ पर बढाया था,
ले साथ अब लोहिया-अरूणा[४] को जय प्रकाश ने
क्रांति की मशाल को अपने लहू से सजाया था।
देख व्यापक यह आन्दोलन लार्ड लिनलिथगो[५] ने
प्रधानमंत्री चर्चिल[६] को संदेश भिजवाया था,
''१८५७ के बाद भारतीय जन क्रांति की मांगो ने
अपने वतन को फिर से महकाया था,
तोड़-फोड़ के इन स्थानीय भागों ने
हर भारतीय में वतन परस्ती के भाव को फिर से जगाया था।''
चला कर ५३८ बार गोलियां पुलिस कर्मियों ने
बागियों पर अव्यवस्था का आरोप लगाया था,
खा कर ५३८ बार गोलियां सात हजार भारतियों ने
अपने मस्तिष्क पर शहीदी तिलक सजाया था[७]
दे गिरफ्तारी साठ हजार दो सौ उन्नीस व्यक्तियों ने
पहनकर जेलों में यातनाओंका जामा, अपने आप को उनमें अटकाया था,
नेतृत्व की नई पीढ़ी के उत्तरदायित्वों ने
देव-पटवर्धन-मेहर-कमला[८] को क्रांति का बिगुल थमाया था ।
लोहिया-विट्ठल सरोजनी-उषा की निडरता ने
भूमिगत रेडियों का संचालन कुशलता से चलाया था,
इस पर चालाकी से फिरंगियों की कुटिलता ने
परिगत राजनीति को जिन्ना की अकुशलता से आजमाया था।

---

३. जय प्रकाश नारायण
४. राम मनोहर लोहिया एवं अरूणा आसफअली
५. भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल एवं वायसराय
६. इंग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधानमंत्री
७. डॉ. अम्बा प्रसाद ने गैर सरकारी सूत्रों के हवाले से मरने वालों की दस संख्या हजार से चालीस हजार के बीच मानी है। डॉ. अम्बा प्रसाद, ''दि इण्डियन रिवोल्ट ऑफ १९४२''
८. आचार्य नरेन्द देव, अच्युत पटवर्धन, युसुफअली मेहर एवं कमला देवी चट्टोपध्याय

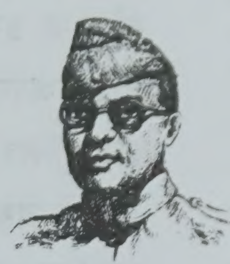
देख फिरंगी चाल, गाँधी के ईमान ने
उसे २० फरवरी ४३ से २१ दिन का उपवास कराया था,
गाँधी के इस आमरण निश्चय की शान ने
विश्व जनमत को नकली प्रजातंत्र का अहसास कराया था।
कर धूमिल अंग्रेजी चेहरों को, गांधी की विजय ने
अंग्रेजी चेहरों से राजनीति का नकली नकाब हटाया था,
प्रभावित कर च्यांग[९]-रूजवेल्ट[१०] को, जनता की विजय ने
अंग्रेजी राजनीति का असली हिसाब दिखाया था,
आत्म संयम के भारतवासियों के ऊँचे मनोबल ने
कर बाध्य अंग्रेजों को ६ मई को गांधी को रिहा करवाया था,
हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक इस आन्दोलन ने
सचमुच में ही जन समूह के हाथों तिरंगा झंडा थमाया था,
भस्म कर औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग, इस आन्दोलन ने
कर झण्डा अपना ऊँचा,
पूर्व स्वतन्त्रता से कुछ कम न स्वीकार करवाया था।

❑

९. लालचीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री च्यांग काई शेख।

१०. अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति।

सुभाष की बलिदानी धारा न्यारी थी



बलिदान की यह धारा अलग से ही न्यारी थी,
सुभाष को यह धरा अपने लहू से भी प्यारी थी,
त्रिपुरा कांग्रेस[१] के बाद फिरंगियों के विरूद्ध
अल्टीमैटम की तैयारी थी,
छः माह में भारत को स्वतंत्र करने की मांग
सुभाष की न्यारी थी,
अब तो फारवर्ड ब्लाक की विचार धारा ही उसे प्यारी थी,
देख उसकी उग्रवादी विचारधारा,
फिर से सरकारी जेल की बारी थी,
दो जुलाई चालीस को फिरंगियों ने बंदी बनाकर,
उसे कलकत्ता जेल में रख दिया था,
बार-बार उसने आज़ादी का मजा चख लिया था,
कानूनी आधार के अभाव में, उसके ज़मीर ने अनशन[२] करवा दिया था
चिंताजनक हालत देख कर, सरकार ने उसे मुक्त कर, घर पर नजर बंद करवा दिया था
पर चकमा देकर पुलिस को, वह २७ फरवरी को पेशावर पहुँच गया था,
उसने अपना नाम सुभाष की बजाय जियाउद्दीन रख दिया था,
भगतराम की सहायता से वह मार्च में काबुल पहुँच गया था।
इस बीच बनी सी आजाद हिन्द फौज, जो मोहनसिंह[३] का सपना था,
'स्वाधीनता लीग'[४] के साथ हर भारतीय बोस का अपना था।
दे सुभाष को नेताजी नाम, रास[५] ने सुभाष को टोक्यो में बुलाया था,
ले शपथ ईश्वर की नेताजी ने भी क्रांति का बिगुल टोक्यों में बजाया था।
आगे बढ़ कर उसने दिसम्बर ४३ में रंगून पर तिरंगा झंडा फहराया था,

---

१. १९३९ के त्रिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन में सुभाषचन्द्र बोस और गांधी जी में मतभेद के कारण उन्होने कांग्रेस की एकता बनाए रखने के लिए कांग्रेस से त्याग पत्र देकर फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की। बी.एल. ग्रोवर एवं यशपाल, "आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्याकंन"(१७७० ई० से वर्तमान समय तक) , एस चांद 2006, वृ. 337-338

२. वही, सुभाष द्वारा २९ नवंबर को जेल में अनशन करने पर सरकार ने उन्हे मुक्त कर उन्हें उनके घर पर ही नजरबंद कर दिया

३. जापान के एक सिक्ख साधु ज्ञानी प्रीतमसिंह व जापानी मेजर फूजीहारा के समझाने पर कप्तान मोहन सिंह अंग्रेजों के विरोधी हो गये और उसने टोक्यो में १ सितम्बर १९४२ को आजाद हिन्द फौज की स्थापना की।

४. लीग की स्थापना टोक्यो में २३ जून ४२ को रास बिहारी बोस के द्वारा की गई।

देकर नारा 'दिल्ली चलो' का ४ फरवरी ४४ को फौज को कूच करवाया था।

हराकर अंग्रेजी सेना को, चीन में उसने कोहिमा पर अपना झंडा फहराया था,

मना कर शहीदी दिवस २२ सितम्बर ४४ को, उसने नया इतिहास बनाया था।

जगा कर भारतीयों को 'तुम मुझे अपना खून दो,

मैं तूम्हे आज़ादी दूँगा' का नारा बनाया था।

आज़ादी के इस जनून ने उसे २८ अगस्त ४५ को वायुयान से तो टोक्यो प्रस्थान करवाया था,

जैसे आज़ादी के जनून ने मानो उसे हमेशा के लिए प्रस्थान करवाया था।

पर बीच में ही भाग्य ने, वायुयान को दुर्घटना ग्रस्त करवाया था,

कर कुरबान अपने को, वतन पर, इस प्रहरी ने शहीदी स्थान पाया था।

आज़ादी के इतिहास में अपना नाम वास्तव में सही ढ़ग से नहीं जताया था।

वतन परस्ती के नाम पर यह कैसी विचित्र स्थिति है ?

शहीदी हस्ती के नाम पर, इतिहास की यह कैसी विचित्र परिणति है ?[५]

☐

---

५. महात्मा गांधी जी के मुकाबलें में स्वर्गीय सुभाष जी को जितना सम्मान मिलना चाहिए था दुर्भाग्य से वह नहीं मिल पाया है।

स्वतंत्रता की पुकार

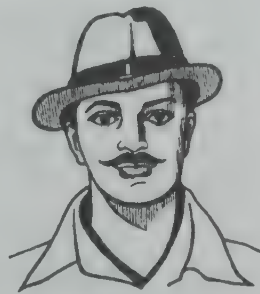


हर जुल्म को मिटाने के लिए
वक्त पर होती है मानवता की पुकार,
हर कौम को जगाने के लिए
सही वक्त पर होती है स्वतंत्रता की पुकार।
गाँधी के आन्दोलन ने
तब की स्वतंत्रता की पुकार,
माँ-भारती के आंगन ने
जब सुनी परतंत्रता की ललकार।
सत्य-अंहिसा तब बने थे
गाँधी के सही पतवार,
अनशन-सत्याग्रह तब बने थे
गाँधी के असली हथियार।
भारतियों पर शासन कर अंग्रेजों ने
जुल्म-सितम किए कई बार,
सहकर जुल्म-सितम भारतियों ने
वतन की मिट्टी से टीके लगाए कई बार।
गाँधी को सत्याग्रह करने से रोका अंग्रेजों ने हर बार,
गाँधी ने भी सत्याग्रह कर भारतियों के साहस को दिखाया हर बार,
आखिर अंग्रेजों ने ९ अगस्त ४२ को गाँधी को किया गिरफ्तार,
सिहर उठा आगाखाँ महल, देखकर अंग्रेजी जुल्म की रफ्तार।
इस पर भी न टूटे गांधी के चरखे के तार,
देशवासियों ने भी सम्भाले आज़ादी के मोर्चे हर बार।
ताकती रही नजरें मौलाना पर, राजनीति की बार-बार,
पर हुए न विचलित मौलाना, बनी वतन परस्ती उसकी ऐतमार।
झुकती रही फिरंगी नज़रें नेताओं पर देख कर अपनी व्यर्थ धार,
शास्त्री-पंत-बाबू[१] ने भी जेल की सलाखें देखी हर बार।
स्वतंत्रता के इस आन्दोलन से जन-जन में गूँजी थी ललकार,
परतँत्रता को मिटाने, स्वतँत्रता की जन-जन में फूटी थी बहार।

❑

१. लाल बहादुर शास्त्री, गोविंद वल्लभ पंत एवं राजेन्द्र प्रसाद

आज़ादी का अरूणोदय



देख क्रांति के उभरते बादल
अंग्रेजी साम्राज्य का सूर्यास्त बन आया था,
घटने लगे राजनीति के उलझते बादल
जब सी.आर. फार्मूले का प्रस्ताव ठन आया था।
जिन्ना ने अपनी हठधर्मी से इसे ठुकराया था,
इस तर्क पर कि सी.आर. फार्मूले ने गाड़ी को घोड़े के आगे लगाया था,
कर गांधी को रिहा, वेवल ने जून १९४५ को शिमला सम्मेलन बुलाया था,
दे साम्प्रदायिकता को रंग, फिर उसी असूल को जताया था,
इस पर इंग्लैण्ड ने २३ मार्च ४६ को, कैबिनेट मिशन को भारत भिजवाया था,
ठुकरा कर पाकिस्तान निर्माण की बात, मिशन ने प्रान्तों को उकसाया था,
कर सीधी कार्यवाही, २६ अगस्त ४६ को, लीग ने राजनीति को नया जामा पहनाया था,
तब आतंक, हत्या, गम की लकीर ने कलकत्ता को डुबोया था,
पंडित नेहरू को २४ अगस्त ४६ को अंतरिम सरकार बनाने हेतु अंग्रेजों ने बुलाया था।

पाकर अंग्रेजी निमंत्रण, पंडित नेहरू ने
उसी दिन सरकार बनाई थी,
कांग्रेस सक्रिय न हो, इसलिए लीग ने
भी सरकार में अपनी पहुँच बनाई थी,
१ दिसम्बर ४६ को वेवल ने
संविधान सभा बुलाई थी,
किन्तु लीग की अड़ंगा नीति ने
फिर वही राजनीति भंग मिलाई थी।
लार्ड एटली की नई घोषणा २० फरवरी ४७ को आई थी,
जिसमें पाकिस्तान निर्माण की घूँटी समाई थी।
इस पर मॉउन्टबेटन की योजना २४ मार्च ४७ को, नई बूटी बन आई थी,
जिसमें पाकिस्तान बनाने की योजना समाई थी,

हुई लम्बी बात-चीत, फिर गुत्थी वहीं की वहीं समाई थी,
आखिर सफल हुई मॉउन्टबेटन युक्ति, जो विभाजन के बादल लाई थी।
नेहरू-पटेल समझे, पर गांधी-मौलाना के दिलों में यह युक्ति नहीं समाई थी,
आखिर गति रोध दूर हुआ, जब ४ जुलाई १९४७ को, विधेयक की बारी आई थी,
१४ अगस्त ४७ को रात्रि १२ बजे, भारत के दो अधिराज्यों में बंटने की साँस बन आई थी,
उसी आधी रात को सुप्त संसार में माँ भारती की परतंत्रता की बेड़ियाँ कट आई थीं,
उसी रात प्राप्त कर अपनी स्वतंत्रता सत्ता, माँ भारती की तंग चरखियाँ कट आईं थीं.
स्वतंत्रता का बीज बोया उदारवादी-उग्रवादियों[१] ने,
इसे जोता क्रांतिकारी समाजवादियों[२] ने,
हल चलाकर पसीना बहाया फार्वड ब्लाक[३] के वतन परस्तियों ने ,
स्वतंत्रता का फल पाया गांधीवादी हस्तियों ने।[४]

❑

---

१. उदारवादी- गोखले, फिरोजशाह मेहता, दादाभाई नौरोजी एवं
उग्रवादी- लाल-बाल-पाल

२. क्रांतिकारी विचारधारा के स्तम्भ भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव।

३. फार्वड ब्लॉक के सूत्रधार एवं बाद में आजाद हिंद फौज के कर्णधार-सुभाष चंद्र बोस

४. गाँधी जी का अहिंसात्मक-[असहयोग (1920-21), सविनय अवज्ञा (1931-32), भारत छोड़ो (1942)] आन्दोलन।

राजस्थान में स्वतंत्रता का परचम लहराया



राजस्थान भी प्रभावित हुआ क्रांति की लहर से,
स्वतंत्रता की किरणें फूटी थीं यहां क्रांति की लहर से,
होकर प्रेरित गाँधी से, यहाँ के लोगो ने
विजय सिंह पथिक के हाथों क्रांति के पौधे को लगाया,
उत्तेजित होकर जुल्म की आंधी से, यहाँ के लोगो ने
तेजावत[१] के हाथों से जागीरों की भ्रांति को मिटाया।
फहरा कर राष्ट्रीय ध्वज व्यास, गट्टानी, जैन-माथुर ने[२]
जोधपुर में लोक परिषद् को महत्वपूर्ण बनाया,
देकर अपनी शक्ति सुखाड़िया, वर्मा, मेहता ने[३]
मेवाड़ राज्य मण्डल को आगे बढ़ाया,
दे गिरफ्तारी जोशी-पंड्या ने[४]
डूँगरपुर में फिरंगी ग्रह हिलाकर जन क्रांति को जगाया,
गिरफ्तारी के इस क्रम में शर्मा-राम-मेहता ने[५],
बूंदी में सत्याग्रह चला कर अंग्रेजी भ्रांति को मिटाया।
त्याग कर वकालत की डिग्रियां, शोभा-माथुर ने[६]
अलवर मे भारत छोड़ों आन्दोलन चलाया,
संवार कर प्रजा मण्डल को, चतुर्वेदी-यादव ने[७]
भरतपुर में जनता का यह आन्दोलन महकाया।

---

१. विजय सिंह पथिक एवं मोतीलाल तेजावत द्वारा क्रमशः बिजोलिया एवं बेगू आन्दोलन चलाया गया।
२. जयनारायण व्यास, रणछोड़दास गट्टानी, अभयमल जैन एवं मथुरादास माथुर द्वारा १९४२ में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के फलस्वरूप अंग्रेज आतंकित हो गऐ, हिन्दुस्तान, १७ जून, १९४२
३. मोहनलाल सुखाड़िया, माणिक्य लाल वर्मा एवं ऋषिदत्त मेहता को राज्य विरोधी गतिविधियों के कारण गिरफ्तार किया गया, नव जीवन, १६ अक्टूबर, १९४४
४. वही, हरिदेव जोशी एवं भोगीलाल पंड्या
५. वही, बृजसुन्दर शर्मा, नैयनूराम व ऋषिदत्त मेहता
६. 'नव जीवन' ११ फरवरी, १९४६, शोभाराम व कृपाराम माथुर
७. '[illegible] संदेश' २ अक्टूबर १९५२, गोपीलाल यादव व जुगल किशोर चतुर्वेदी

कर स्वयं सेवक दल का गठन, पालीवाल ने
सवाई माधोपुर में हर बार जन आन्दोलन को चलाया,
कर आज़ाद मोर्चे का गठन जोशी-पाण्डे-बजाज ने
जयपुर में सरकार के विरूद्ध जनता को जगाया,
देकर क्रांतिकारियों को अस्त्र-शस्त्र राव ने
अजमेर के जन-आन्दोलन को चलाया
लेकर जनसमूह को, शारदा नारायण ने
प्रान्तीय परिषद् का संचालन कुशलता से चलाया[९]
कर कानून का उल्लंघन गोयल, गंगादास, आचार्य ने[१०]
बीकाने में प्रवेश कर जन आन्दोलन को सही बताया,
देकर अपनी आहुति सागर मल ने
जैसलमेर में गुमान के मान को सही गिराया[११],
खाकर लाठियाँ अंग्रेजों की, आचार्य, मस्तान ने
गंगानगर में क्रांति की मशाल को जलाया,
देकर गिरफ्तारियाँ अंग्रेजों को रतनचंद, कुम्भाराम ने
रायसिंहनगर में जन क्रांति की मिसाल को बनाया[१२]।
१ जुलाई ४६ को रायसिंह नगर की जनता ने
तब एक अद्‌भुत साहस दिखाया
रखकर कानून को ताक पर, रायसिंह नगर की जनता ने
जब सभा बुलाने का एक अद्‌भुत साहस जुटाया।
जन समूह पर पहले सरकार ने

---

८. रामकरण जोशी, बी.एस.पाण्डे एवं जमना लाल बजाज द्वारा जयपुर में एक जन आंदोलन चलाया गया। केला, भगवान दास, देशी राज्य शासन, पृ. २४९

९. राव गोपाल सिंह अजमेर क्रांति के प्रमुख स्तंभ थे। चांदकरण शारदा एवं रामनारायण चौधरी द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन का संचालन किया गया। राज्य.अभि. बीकानेर, फाईल सं. 4-6/जे.एस.सी.।

१०. रघुवर दयाल गोयल, गंगादास कौशिक एवं दाऊदयाल आचार्य द्वारा महाराजा के सुरक्षा कानून का उल्लंघन करने पर उन्हे बंदी बनाया गया। केला, वही पृ. २०६-२०७

११. बीकानेर अभिलेखागार की फाईल सं. २/जे.एस.सी. के अनुसार गुमानसिंह पुलिस अधीक्षक द्वारा स्वतंत्र सेनानी सागरमल गोपा को यातनाएँ देकर मार दिया गया।

१२. गौरीशंकर आचार्य, मस्तान सिंह, रतनचंद एवं कुम्भाराम आर्य द्वारा जनजागरण का कार्य किया गया, 'विश्वमित्र' १७ जुलाई, १९४६

पुलिस से लाठी चार्च करवाया,
फिर चला कर गोलियाँ, सरकार ने
अपनी कायरता का सरचार्ज लगाया[१३],
होकर शहीद बीरबल ने
माँ-भारती का कर्ज़ चुकाया,
खेल कर अपनी जान पर हर शहीद ने
अपना फर्ज़ निभाया[१४]।
जला कर अपनी मशालों को, जनता ने परतंत्रता का नाम मिटाया,
लुटा कर अपनी जानों को जनता ने
स्वतंत्रता का परचम फहराया।

❑

१३. वही, इस गोली काण्ड में बीरबल राम शहीद हो गया विश्वमित्र, १७ जुलाई, १९४६
१४. वही।

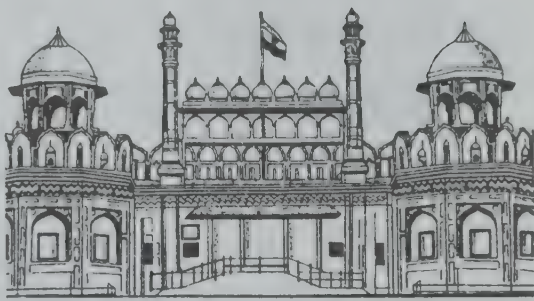
यह हम सबका परचम है

यह देश का परचम है
हम सबका परचम है
इस परचम के खातिर
शहीद पर सौ-सौ वार हुए,
अपने हमदम के खातिर
शहीद मर कर भी सौ-सौ बार जिए,
यह हम सबका द़मखम्[१] है
यह देश का परचम है।
इसकी पहचान की खातिर
फिदा हुई बाल-भगत की बोलियाँ
इसके मान के खातिर
मर मिटीं गांधी-सुभाष की टोलियाँ
यह हम सब का द़मखम् है[२]
यह देश का परचम है।
इसकी आन के खातिर
सागर भी रास्ता छोड़ेगा,
इसकी शान के खातिर
पर्वत भी सीस झुकाएगा,
आसमाँ पर यह तिरंगा हमेशा लहराएगा
इस जमीं पर अब कोई दुश्मन टिक नहीं पाएगा,
यह हम सबका मख़दम्[३] है
यह देश का परचम है।

❑

१. साहस
२. प्राण, जीवन शक्ति
३. मालिक, स्वामी, जिसकी सेवा की जाये

उठो वतन के वास्ते



उठो कि वक्त़ आ गया
उठो कि वक्त़ छा गया
उठो चमन के वास्ते।
पुकारती है मंजिले
हम्तहाँ के वास्ते,
पुकारते हैं रास्ते
कारवाँ के वास्ते,
अब गगन हमें महकाना है
अपने वतन के वास्ते।
वतन का आज कर्ज़ है
इसकी हिफ़ाजत फर्ज़ है,
बिकने न देंगे ये ज़र्मी
मिटने न देंगे ये हंसी
अब चमन हमें सजाना है
अपने वतन के वास्ते।
मिटाओ दिल की दूरियाँ
इस मिट्टी के वास्ते।
बनाओ न मजबूरियाँ
अपनी खुशी के वास्ते,
अब नया खून हमें बनाना है
अपने वतन के वास्ते।

❑

देश प्रेम से बड़ा नही कोई मन्दिर भगवान का



पुकारता वतन है
पुकारती है वादियाँ,
सुनसान सा चमन है
पुकारती है आंधियाँ।
समर के ये रास्ते
कंटक भरे ये रास्ते
कुचल देंगे ज़ालिमों के सिर
वतन की सरहदों पर गिर
टूटे रिश्तों को जोड़ दें
अब ये वतन की वादियाँ।
हर भारतीय की रक्षा करेंगे
युद्ध के मैदान में डट कर रहेंगे
सदियों का दामन न छोड़ेंगे
नफरतों को प्यार में बदलेंगे
बुझे दिलों को मिला दे
अब ये वतन की वादियाँ।
अपने मन से बड़ा वही
जो रखे मान हर किसी इन्सान का,
देश प्रेम से बड़ा नहीं
कोई मन्दिर भगवान का।

❑

मर भी जाएं इस बाग में



मर भी जाएँ इस बाग में
तो शिकवा तो न करना,
जल भी जाएँ वतन के राग में
तो गिला तो ना करना।

कई पद्मनियाँ स्वाह हुई वतन के खातिर,
कई चिमनियाँ बुझ गई अमन के खातिर,
जीया नहीं यहाँ कोई अपमान के खातिर,
मर मिटा हर कोई यहाँ अपने ईमान के खातिर,
अब लुट भी जाएँ जहाँ हमारे
वतन की शान के खातिर,
तो शिकवा तो ना करना।

लाखों दीपक बुझते रहे
करोड़ों को जलाने के खातिर
आंखों के शोले बरसते रहे
फिरंगियों के होंसले हिलाने के खातिर,
अब मिट भी जाएँ निशान हमारे
अमन की शान के खातिर,
तो शिकवा तो ना करना।

हम हैं न हिन्दु-मुस्लिम न सिख-ईसाई,
हम हैं आपस में भाई-भाई,
सद्भावना हमारी बनी रहे,
ध्वजा हमारे हाथो में थमी रहे।
अब कट भी जाएँ सर हमारे
वतन की शान के खातिर,
तो शिकवा तो ना करना।

❑

मेरे वतन की हसीन शाम है

ये हसीन शाम है
मेरे वतन की हसीन शाम है।
जीना सबके लिए सब्र हैं यहाँ
मरना वतन के लिए फ़ख्र है यहाँ
धन्य है वे लोग धन्य है उनकी जवानियाँ
शहीद होकर जिन्होनें मिटा दी अपनी कहानियाँ
वतन् के लिए बढते रहना
फ़कत यही इक मुकाम है
मेरे वतन की हसीन शाम है।

अलग-अ़लग बस्तियाँ पर मंजिल एक है यहाँ
अलग-अलग किश्तियाँ पर साहिल एक है यहाँ
प्यार को नफ़रत में न बदलना आता हैं यहाँ
अमन को गफ़लत में न बदलता भाता है यहाँ
वतन के लिए मरते रहना
फ़कत यही इक जाम है
मेरे वतन की हसीन शाम है।

गोखं़ले-तिलक का है अहसान यहाँ
भगत-आज़ाद का हैं ईमान यहाँ
गांधी-सुभाष का है वरदान यहाँ
शहीदों के लहू से बन जाता है तूफान यहाँ
मन में आ जाता है मर मिटने का अरमान यहाँ
वतन के लिए मिटते रहना
बस यही इक अंजाम है।
मेरे वतन की हसीन शाम है।

हम पहले हैं हिन्दुस्तानी

हम पहले हैं हिन्दुस्तानी
बाद में हैं राजस्थानी,
मजबूरी अब सूनी राहों की धूल न फांकेगी,
मासूम कलियां अब गंदी गलियों की भीख न मांगेगी
हर बेगैरत परेशानी को मिटायेगी
हर किसी से निभायेगी,
हमारी हर अदा तूफानी
हम पहले हैं हिन्दुस्तानी।

हमारी किस्मतें दरियाओं के रूखों को पलटेगी
हमारी अस्मतें अबलाओं के दुखों को मिटायेगी
अब मैदानों में झूम के निकलेगी
हमारी हर अदा दीवानी
हम पहले हैं हिन्दुस्तानी।

अब जुल्म की आंधी न आयेगी
हक मांगने वालों को अब फाँसी न आयेगी
अब न अरमान लुटेंगे, न आज़ादी मिटेगी
अब शत्रुओं पर टूट पड़ेगी
शहीदों की हर अदा मस्तानी
हम पहले हैं हिन्दुस्तानी।

❑

वतन के नौजवां कदम बढ़ा कर चल

जीना तो सबको हैं यहाँ
एक दिन मरने के लिए,
पर जिए तो वो यहाँ
जो मरे सदा वतन के लिए।

वतन के नौजवां
कदम बढ़ा के चल,
आसमां पे आशियाँ
समर बना के चल।

ये वादियाँ वतन की,
ये जिंदगी अमन की,
चमन के वास्ते आज
तू महक बना के चल

पुकारती ज़मीं आज
परिधान माँग कर,
पुकारता आसमाँ आज
बलिदान मांग कर।
मरघटों की राह में आज
क़फ़न बना के चल।

❑

मुझे मेरे वतन में अपनी अंतिम साँसे गिनने दोरख

मुझे मेरे वतन में
अपनी अंतिम साँसे गिनने दो।
पूजा है वतन को अपने मन में
अब इसकी अंतिम यादें महकने दो।
वह भी एक शहीदी ज़फ़र[१] था,
जिसने जीतेजी दो घूँट ज़हर पी लिए
वह भी एक शहीदी सफ़र था,
जिसने जीतेजी कई शहीदों के होंठ सी लिए
अब मुझे मेरे जीवन में
शहीदी यादें समटने दो।
शहीद भगतसिंह की मशाल को,
फिरंगी काल ने पी लिया,
राजगुरू-सुखदेव की चाल को[२],
फिरंगी चाल ने सी लिया,
अब मुझे मेरे जीवन में,
शहीदी राहें चुनने दो।
गुरू तेग बहादुर-गुरू गोविन्द सिंह की वतन परस्तियाँ[३]
फिदा हुईं
इसी चमन के खातिर,
आँधी में भी नारायण-लोहिया-लाल बहादुर देश की हस्तियाँ[४]
फिदा हुईं
इसी वतन के खातिर,
अब मुझे अपने इसी जीवन में
शहीदी असूल चुनने दो। ❑

---

१. बहादुरशाह ज़फ़र-अंतिम मुगल बादशाह एवं 1857 की क्रांति का सेनापति

२. स्त्रोत: 'भारत', इलाहाबाद, शुक्रवार, २७ मार्च १९३१ (वर्ष ३,अंक ५२), भगतसिंह सहित इन दोनों को लाहौर असैम्बली षड़यंत्र में दोषी मानते हुए फाँसी की सजा दी गई।

३. सिखों के प्रसिद्ध गुरू (नवीं पातशाही गुरू तेग बहादुर एवं दसवीं पातशाही गुरू गोविन्द सिंह)

है वतन का रास्ता ख़रा-ख़रा

आजा जरा, पास आ ज़रा-ज़रा
है वतन का ये रास्ता ख़रा-ख़रा
आज मिटने लगा है रास्ता,
मिटने लगी ये जिन्दगी
है जिन्दगी का वास्ता,
आजा जरा, गुनगुना ज़रा-ज़रा,
है वतन का ये रास्ता ख़रा-ख़रा।

लाखों जां निसार कर,
मिलकर चलेंगे वतन को यूं निखार कर।
मिटने लगी है ये हंसी,
है हंसी का आज वास्ता ज़रा-ज़रा,
है वतन का ये, रास्ता ख़रा-ख़रा।

कुर्बान हुए कई गुल यहाँ
चमन को निखार कर,
मर मिटे हैं कई कुल यहाँ
वतन को संवार कर,
मिटने लगी ये रबी[१],
है रबी का आज वास्ता ज़रा-ज़रा
है वतन का ये रास्ता ख़रा-ख़रा।

❑

१. वसन्त ऋतु

मेवाड़ की रण भूमि घाटी पर

इतिहास की बाहों में
मेवाड़ की राहों में,
सिसोदिया की निगाहों में
त्याग की राहों में,
कहती है कोई गाथा, म्यान-कटारों में,
जुड़ती है वह गाथा मान-मर्यादों में
मेवोड़ की रण भूमि घाटी पर,
बाँके वीरों की तलवारें तनी हुई थीं,
कुम्भा, सांगा, प्रताप जयमल-फत्ता की थाती पर
कांटों की राहें बनी हुई थीं।
कर्मा-पद्मनी स्वाह हुईं
जौहर के अंगोरों पर,
अनुराग प्रीति का बन मीरा स्वाह हुईं
कृष्ण भक्ति के इशारों पर,
सिर ऊँचा कर हर गाथा अमर हुई
देश भक्ति के उबलते अंगारों में।

❑

मज़हब जुदा-जुदा है पर खुदा तो एक है



जो तेरा मक्सद है
वो मेरा तो ना है,
मज़हब जुदा-जुदा है,
पर खुदा तो एक है ।
मज़हब के नाम पर
क्यों लहू बहाते हो?
शोहरत के नाम पर ?
क्यों अमन रूलाते हो?
कारवां जुदा-जुदा है
पर आसमां तो एक है।
दो गज़ ज़मीं के वास्ते
क्यों कफ़न बनाते हो?
मर्दे-मोमन के वास्ते
क्यों चमन को उजाड़ते हो?
गुल जुदा-जुदा है
पर गुलिस्ताँ तो एक है ।

❑

मुझे मेरे वतन का वक्ते सफर याद आया

मुझे मेरे वतन का वक्ते सफ़र
फिर याद आया,
शहीदों के लहू का वक्ते सफ़र
फिर याद आया ।

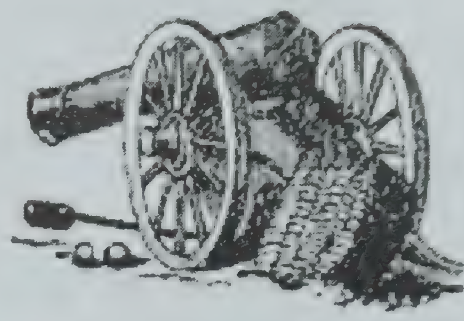
पहले सफ़र था वतन की आँख का,
अब से सफर है वतर की साँस का,
अगले सफ़र की साँस का
ये वतन फिर याद आया।

पहले सफर था हमारे मान का,
अब ये सफर है हमारे ईमान का ,
अगले सफ़र के अरमान का
ये चमन फिर याद आया

बहके थे ये कदम दूर से,
अटके थे ये मन किसी नूर से,
अगले सफ़र के सिन्दूर का
वक्ते सफ़र फिर याद आया।

❑

सैनिक और सरहद



बीस साल बाद,
सैनिक फिर घर पर लौट रहा था
एक मुद्दत के बाद
लिए मन में उमंग,
फिर, अपनी प्रिया की सोच रहा था
बीस साल बाद
क्या वह पहचान पाएगी ?
एक अन्तराल के बाद,
क्या वह उसे जान पाएगी ?
अपनी वही आस लिए,
आ पहुँचा वह कुटिया के द्वार
जहाँ, उसी आगाज़ के लिए
टिका हुआ था उसका प्यार।
कई वर्षों तक मातृभूमि की रक्षा में,
अपने जीवन को गला चुका था,
इन वर्षों तक अपनी भूमि की सुरक्षा में,
अपने जीवन को दाव पर लगा चुका था ।
लेकिन उसकी जीवन नौका को
कौन भला बचा पाया था?
उसने तो सब कुछ ही,
अपना लुटाया था,
कुछ भी तो नहीं,
अपने लिए जुटाया था।
उसकी प्रिया दुनियाँ से
मुख मोड़ चुकी थी,
हंसते-हंसते वह इस ज़मीं से
अपना नाता जोड़ चुकी थी,
लेकिन जाते-जाते वह

सैनिक के लिए
अपना अंतिम संदेश छोड़ चुकी थी-
मेरी समाधि के पास आना,
साथ में महकते हुए फूल लाना,
सैनिक को प्रिया का संदेश स्वीकार था,
संदेश ही उसकी जीवन-नौका का आधार था ।
प्रिया की समाधि पर,
सैनिक पुष्प चढ़ा कर
उठा, चला, किन्तु रुक गया,
वृक्ष से लटकता तना ज्यों झुक गया
उसी समय समाधि से
आ रही थी मंद-मंद आवाज़
जाओ सैनिक जाओ,
उसी सरहद पर ,
सरहद की लाज़ बचाने वाले,
सरहद की चट्टानों पर चलने वाले,
तुम चट्टानों को पिघला दो
तुम अजेय सिपाही,
मरघट की राहों पर चलने वाले,
तुम देश की आन बना लो ।
तुम जिस सरहद से आये हो
उसी को, देश के खातिर
अपनी राह बनाओ।

❑

एक अन्तराल के बाद

एक अन्तराल के ब़ाद
रुक-रुक कर,
मन्दिर-मस्जिद का विवाद,
अख़बार की सुर्खियों में
फिर आ जाता है,
ज्यों एक अन्तराल के बाद,
कच्छ-मच्छ से छुप कर,
किसी विवाद के जाल के बाद,
कोई मुखोटा बार-बार डूबता तैरता,
सागर की लहरों पर
फिर छा जाता है।
लगता है किसी को
न तो मन्दिर से
और न ही मस्जिद से
लगाव है,
लगता है हर किसी को
अपने अहम् के मन्दिर से ही
लगाव है,
अब किसी विराम काल के बाद,
रुक-रुक कर,
समाज की तंग चरखियों में,
यह विवाद
फिर आ जाता है।
यह मुखौटा भी
कैसा अजीब है?
उसका खोटा ही
नसीब है।
वह जानता नहीं
कि सागर और गागर में
चोली दामन का साथ होता है,

वह मानता नहीं,
कि निसार और निखार मे,
पावन मन का साथ होता है ।
इसलिए अशांति त्याग कर,
वह शांति से सुलह कर ले
मोड़ कर पथ अपना भ्रांति से,
वह शांति की हर राह से सुलह कर ले।
हर किसी का मान रखना
यह हमारी संस्कृति की शान है,
किसी के अरमान को दबाना,
यह हमारी संस्कृति का अपमान है।
अब यह कंकाल सा मुखौटां,
रुक-रुक कर
डूबता-तैरता
सागर की गहराइयों में
फिर से डूब जाता है ।
इसे देखकर
बुद्धिजीवियों के
चेहरे की हवाइयाँ
उड़ जाती हैं,
यदा-कदा मंदिर-मस्जिद
के विवाद से उनकी नीतियाँ
नहले पर दहले से ऊब जाती हैं,
ये बुद्धिजीवी इस ताक में
बैठे हैं कि कब यह
मुखौटा फिर से तैर कर
बाहर आ जाये,
ताकि इनके अपने हंगामें से
वोट बैंक का कोटा फिर से तैयार हो जाये।

❑

वतन की हसरतों को न बरबाद कर

खेलकर अपनी जान पर,
घर किसी का आबाद कर,
अपनी बिगड़ती शान पर
घर किसी का न बरबाद कर।
यूँ मौत का सामान लेकर,
मिटाओ न सबकी आज़ादी,
यूं बेबसों की जान लेकर,
लिखाओ न सबकी बरबादी
होकर चूर अपनी शान पर
अब रिश्तों को न बरबाद कर।
अब कोई मन्दिर न गिरे,
अब कोई मस्जिद न गिरे,
फिर न आएं बुरे दिन फिर कर,
मिट जाएं बुरे विचार छिन्न-भिन्न होकर।
होकर चूर अपनी आन पर
अब फरिश्तों को न बरबाद कर।
अब कोई नफरतों का शोर न हो
और न कोई अफ़सरशाही,
अब कोई कयामतों का जोर न हो
और न कोई तमाशाई,
बन कर शूर अपने अभिमान पर
अब वतन की हसरतों को न बरबाद कर।

❑

ऐ खुदा ! सुखा देना हमारे जख्मों को



आज तंगदिलों ने
मानवता को आ घेरा है।
संगदिलों ने
उड़ते पंछी के,
बिलों को आ घेरा है।
रो उठे हैं, अब इस चमन के सब पंछी,
कहीं मिट न जाए सबके लबो की हंसी,
अब महाकाल भी रोता है,
इन्सां अपने ही जाल में सोता है,
किसी ने सख़्त बीज बोया है यहाँ
किसी के वक़्त का सितारा खोया हैं यहाँ
अब न्याय नियति को करना होगा,
अपनी करनी पर अब हमें,
कुछ कांटों को भी सहना होगा।
ऐ खुदा! अब बचा लेना
इस घर आंगन को,
क्षमा करना,
इन बस्ती गलियारों को,
सुखा देना हमारे ज़ख़्मों को,
शांति देना हम सबके मनों को।

❑

ईश्वर तो हर सच्ची राह में मिलेगा



ईश्वर-अल्लाह एक ही रंग के दो रूप हैं,
राम-रहीम एक ही अंग के दो स्वरूप हैं।
ईश्वर को आज कहाँ-कहाँ ढूँढने निकले?
अल्लाह को आज यहाँ-वहाँ ढूँढने निकले।
ईश्वर तो हर सच्ची राह में मिलेगा,
अल्लाह तो हर सच्ची निगाह में मिलेगा।
इसे मन्दिर-मस्जिद के फ़ेरों में ना देखो,
इसे गिरजे-गुरूद्वारों के डेरों में ना देखो,
इसे दहकती आग के अंगारों में ना देखो,
इसे लटकती म्यान की तलवारों में ना देखो,
यह तो हर गरीब की राह में मिलेगा।
दूर करोगे जो गरीबों के चेहरे की रंगत,
तो वहीं ईश्वर को पाओगे।
मान लोगे जो इन्सानियत के धर्म की संगत,
तो वहीं अल्लाह को जानोगे।
यह तो दिल के करीब से,
हर किसी सच्चे ईमानदार व्यक्ति की निगाह में मिलेगा ।
ईश्वर तो हर सच्ची राह में मिलेगा ।

❑

हम यहाँ एक हैं

गर्दिशों में आसमान है,
पर एक तो है।
दिलबरों में तूफान है,
पर नेक तो है।
रंग यहाँ अनेक हैं,
फिर भी हम एक हैं।

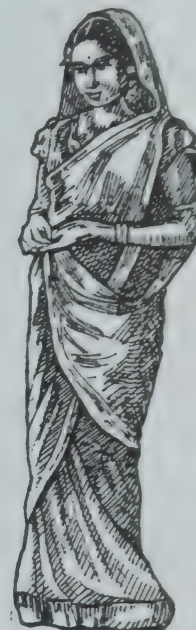
सिलवटों सी ज़िन्दगी में भी
नाम वतन का लबों पर पहले आए,
करवटों सी जिन्दगी में भी
हर जाम चमन का लबों पर पहले भाए,
धर्म यहाँ अनेक हैं,
फिर भी हम एक हैं।

लड़खड़ाती पगडंडी पर भी
हर शाम वतन के नाम हो जाए,
डगमगाती पगडंडी पर ही
हर दुश्मन का काम तमाम हो जाए,
प्रान्त यहाँ अनेक हैं,
फिर भी हम एक हैं।

❑

नारी चेतना

इस चमन में नारी को ही घुट-घुट कर चलना है



इस चमन में नारी को ही
घुट-घुट कर चलना है,
पर उसे रोना मना है।
आंसू सी मन में, काननबाला को ही
झुक-झुक कर चलना है,
पर आंसुओं को ढोना मना है।

इतिहास के पृष्ठों ने,
रूदन और हाहाकार के,
बजते हुए बाजों को सी लिया,
इस अहसास से,
नारी के कुछ पृष्ठों ने,
मानवता के दमानों और ताशों के
गाजों को पी लिया,
अब तो बची राख को ही
घुट-घुट कर मरना है,
पर उसे भी रोना मना है।

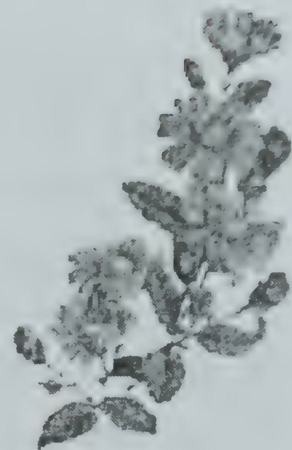
जब चमन की डाली को मालिक ने एक बनाया है,
तो नारी को ही क्यों सताया है ?
मन की तारों से
कर एक तार जुदा,
नारी को ही क्यों रुलाया है ?
पतझड़ के अहसास से
अब बाग़ की क्यारी को ही,
घुट-घुट कर जलना है,
पर उसे भी रोना मना है।

दहेज़ की वेदी

मैं माज़ी के हर नक्ष को मिटाना चाहता हूँ
मैं दहेज मांगने वाले हर शक्स् को बताना चाहता हूँ,
कि नारी सबकी इज़्ज़त है, गैरत है,
अहं ही पुरुष की जन्नत है, हसरत है।
वक्त का सामना करना अब नारी की किस्मत नहीं है
बदलते वक़्त में जुल्म को रोकना ही उसकी हैसियत सही है।
अब नारी के अरमां बदलेंगे, लेंगे नई करवटें,
ये बुझे से मन अब लेंगे नई आहटें।
नारी! तुम नये साँचे में बदल डालो अपनी रुसवाइयाँ,
काट डालो समाज की तंग चरखियाँ।
लिख लो अपने लहु से वतन की नई सुर्खियाँ,
बढ़ा कर कदम नई राहों पर, बना लो अपने आशियाँ ।

❑

सूनी मांग का सिन्दूर



सदियों से बांधी अपनी आहें,
तंग चरखियों से सांची अपनी राहें,
कहाँ अपना हक ले पायी है?
कहाँ अपना भाग्य पुरुष के शक पे बना पायी है?
सूनी मांग में वह सिन्दूर कहाँ भर पायी है?
कहीं दूर से सुनी किसी शहनाई को, शहनाई से
अपने सूखे अधरों को बुना काई से।
समेट लिया अपने अरमानों की राई को,
किसी पास से चली पुरवाई से।
समेट न पाई अपने तूफानों की अंगड़ाई को,
सूने सागर ने फिर वही रुसवाई पायी है,
सूनी मांग में वह सिन्दूर कहां भर पायी है ?
कब तक चलेगी उसकी सिसकियाँ ?
कब तक खुलेगी हमारी तंग चरखियाँ ?
घुट-घुट कर अरमां कोई अब न उबले,
झुक-झुक कर आसमाँ कोई अब न जले।
कोरी अखियाँ, सूनी शाम को कहाँ रंगत दे पायी है?
सूनी मांग में वह सिन्दूर कहाँ भर पायी है?

जला डालो दहेज की निशानियाँ



हर बार समाज की चरखियों में
नारी के जलाने की कालिख आ जाती है,
हर बार अखबार की सुर्खियों में
नारी उत्पीड़न सुनाने की स्याही छा जाती है।

फिर दहेज की बलि पर
नारी की सिसकियाँ,
फिर मानवता की छवि पर
नारी की हिचकियाँ,
सुन कर नियति भी मौन हो जाती है
सुन कर इन्सानियत की भी मौत हो जाती है।

इन्साँ ने युग बदल डाला है,
पर दहेज का युग नहीं बदला है।
इन्साँ ने अपना ऊपरी लिबास को बदल डाला है,
पर दहेज के नाम को नहीं बदला है।

बाहर से तो, हर कोई दहेज से परहेज जताता है
पर अन्दर से हर कोई दहेज की सेज सजाता है
इस प्रकार इन्साँ, अन्यायी तूफान उठा रहा है
इस प्रकार हर क्षण, वह सत पर पाप चढ़ा रहा है।

कब तक चलेगी ये धमनियाँ ?
कब तक चलेगी ये चिमनियाँ ?
वक्त के साथ कर दो अपनी कुरबानियाँ
वक्त के साथ त्याग दो अपनी रुसवाइयाँ
मिटा डालो दहेज की कहानियाँ
जला डालो दहेज की निशानियाँ ।

❑

बेटियों को भार न समझो

बेटियों को अब भार न समझो
भार समझोगे, तो भार से लद जाओगे,
उधार समझोगे, तो उधार के मन से दब जाओगे
डूबते सूरज की तरह इन्हें कोरे
गले का हार न समझो।



इन्हें अपने घर की खूँटी न समझो,
सूँघ कर फैंकने वाली कोई बूटी न समझो,
इन्हें कांच की गुड़िया न समझो,
आंक कर गलत इन्हें, कागज की पुड़िया न समझो,
दरिया में उठते ज्वार में,

इन्हे कोई पानी की हल्की धार न समझो।
दहेज के लोभ से,
इनके मन को बेगाना न करो,
मांग कर कीमती समान इनसे
अपने मन को दीवाना न करो
लगती आर[१] की तरह,
इन्हें कोई पतन का द्वार न समझो।

❑

१. कीलें जो सांटे में लगी रहती है।

नारी को अब लटकती हुई तख्ती न समझो



नारी को अब लटकती हुई,
कोई तख्ती न समझो।
उसे अपने मन की मचलती हुई,
पिस्सी[१]-पीसती चक्की न समझो।

नारी ने जन्म दिया है,
कई हस्तियों को,
खुद जुल्म सहकर देखा है,
पुरूषों की मस्तियों को,
अब अपने विनोद के खातिर,
उसे इतनी सस्ती न समझो।

नारी ने हमेशा घर को,
जन्नत बनाया है,
देकर जन्म महान संतों को ,
हमारी संस्कृति को उन्नत बनाया है,
अब अपनी शोहरत के खातिर,
उसे वीरान बस्ती न समझो।

नारी अब स्वयं सत्य है,
मंज़िलों तक बढ़ने के लिए,
वह अब स्वयं सक्षम है,
क़ाफ़िलों के साथ चलने के लिए,
अब अपने मर्दे मोमन के खातिर,
उसे डूबती हुई किश्ती न समझो।

☐

१. एक प्रकार का गेहूँ।

बलिदानी नारी की चिंगारी



इस राख के ढेर के नीचे कोई चिंगारी छाई है,
जिसे देख फिरंगी की लाश भी शरमाई है।

सुनो शहीद नारियों की कहानी,
वक्त अब मांग रहा है सबकी कुरबानी।
वो झांसी की रानी बनी थी मरदानी,
मिटाकर फिरंगियों की चाल, वो बनी थी मस्तानी,
इस राख के ढेर के नीचे फिर वहीं चिंगारी बन आई है,
जिसे देख फिरंगी की लाश भी शरमाई है।

वक्त ने उस समय मांगी थी कुरबानी,
शहीद हुई माताजी[१] महारानी,
प्रथम महिला शहीद का खिताब प्रीतिलता[२] ने पाया,
कठोर कानून ने कल्पना को आजीवन कारवास सुनाया,
इस राख के ढेर ने अपने नीचे फिर अंगड़ाई पाई है,
जिसे देख फिरंगी की लाश भी शरमाई है,

दीक्षान्त समारोह में बीना[३] ने गवर्नर को गोली दागी,
पर निशाना चूका और वह कहलाई बागी,
सिस्टर निवोदिता[४] भी बनी क्रांति की रागी,
आँसू पोछ पंजाब माता विद्यावती [५] फिर जागी,
क्रांति का दीप जलाने मदाम कामा[६] विदेशों में भागी,

स्त्रोत: धर्म युग, 28 अगस्त, 1988 वृ. 49-60 एवं बीकानेर अभिलेखागार की कुछ फाइलें

१. इन्होंने नेपाल में रहकर १८५७ ई- के स्वतंत्रा संग्राम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

२. स्नातक की उपाधि से सम्मानित चटगांव स्कूल की एक अध्यापिका जिसने २४ सितम्बर १९३२ एक अंग्रेजी क्लब पर आक्रमण कर शहीदी प्राप्त की।

३. इसने ६ फरवरी १९३२ को बंगाल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर गर्वनर पर गोली दागी थी।

४. स्वामी विवेकानन्द के साथ शिष्या के रूप में आई किन्तु बाद में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं

५. शहीद भगतसिंह की माँ

६. पारसी परिवार में जन्मी कामा उपचार हेतु इंग्लैण्ड गई, वहाँ कृष्णजी वर्मा से प्रभावित होकर वह क्रांतिकारी बन गई

राख के ढेर ने फिर अंगड़ाई पाई है,
जिसे देख फिरंगी की लाश भी शरमाई है।

सरला देवी[७] ने आज़ादी के मर्म जो पहचाना,
शुरूकर उत्सवों की परम्परा, अपने गर्म लहू को जाना,
माताजी जगरानी देवी ने आज़ाद को तिलक लगाया,
लिखाकर अपनी मौत प्रीतिलता शांति देवी[८] ने शहीदी तिलक पाया,
भुला कर सब कुछ यमुना देवी[९] ने सावरकर को वतन का पाठ सिखाया,
खेलकर अपनी जान पर, एनीबीसेंट ने होम रूल आन्दोलन चलाया,
गाँगुली[१०]-सुधा चौधरी[११] ने आँधी में भी शहीदी राह को सजाया,
देकर सब कुछ अपना कस्तूरबा ने गांधी को आगे बढाया,
मूलवंती[१२]-सरोजनी[१३] की कुर्बानियों ने भी अंग्रेजों को मज़ा चखाया,
इन्दिरा-अरूणा[१४] ने भी आजा़दी की कि़ताब को सजाया,
मिट कर अमन के लिए उन्होंने शहीदी खि़ताब पाया।
इस राख के ढ़ेर के नीचे फिर वहीं चिंगारी भर आई है,
जिसे देख दुरंगी दुनियां की आँख भी शरमाई है।

❑

---

७. यह रविन्द्रनाथ ठाकुर भी भतीजी थी, तिलक द्वारा चलाए गए शिवाजी एवं गणपति उत्सवों से प्रभावित होकर उसने बंगाल में भी ये उत्सव चला कर वहाँ राजनीतिक जागृति का प्रसार किया। होम विभाग, राष्ट्रीयअभिलेखागार, नई दिल्ली।
८. ये दोनों चटगाँव की साहसी बालिकाऐं थीं जिन्होंने क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लिया
९. यह प्रसिद्ध स्वतंत्र सेनानी दामोदर सावरकर की पत्नी थी
१०. यह कलकत्ता की एक स्कूल अध्यापिका थी जिसे प्रसिद्ध क्रांतिकारी शशोधर आचार्य की सहायता करने के कारण पुलिस की जलालत झेलनी पड़ी
११. चटगाँव की एक क्रांतिकारी बालिका, जो क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लेकर शहीद हो गई
१२. मूलवंती रामप्रसाद बिस्मिल की माँ थी
१३. सरोजनी नायडू १९४२ के आन्दोलन में भाग लेने वाली देशभक्त एवं समाज सेविका थी
१४. बालिका इन्दिरा नेहरू एवं अरूणा आसफ अली

वतन के यश के लिए बढना क्रांति है



नारी ! तुम यह जान लो,
कि अपने वतन के यश के लिए बढ़ना
क्रांति है,

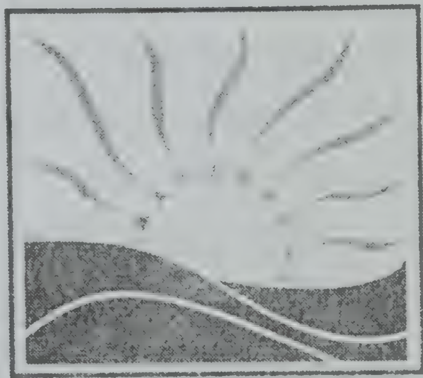
नारी ! तुम यह मान लो,
कि अपने मन को मार पुरूष के ,
यश के लिए चलना,
भ्रांति है ।

तुम्हें क्रांति से ही,
चमन की सुप्त मालाओं को
जगाना है,
मिटा कर भ्रांति अपने मन की
अब तुम्हें वतन की पाठशालाओं को
महकाना है।

हट गए हैं
निराशा के कोहरे,
तेरे मन से,
जम गए हैं
आशा के मोहरे,
तेरी लगन से।
अब आशा ही
क्रांति है।

❑

कुछ हम बनने कुछ दुनियाँ बनाने निकले



आज हम क्या बनाने निकले ?
कुछ हम बनने कुछ दुनियाँ बनाने निकले।

हर घर यहाँ कोरी शान है,
हर मन यहाँ वही श्मशान है।
बस्ती तो है यहाँ, पर वीरान है,
किश्ती तो है यहाँ, पर तूफान है।
तूफां को आज हम आशियाँ बनाने निकले,
कुछ हम बनने कुछ दुनियां बनाने निकले।

हर बात यहाँ रूहानी है,
हर बार दहेज की कहानी है।
बहुएं यहाँ क्यों जलाई जाती है?
चौखट पर ही क्यों रुलाई जाती है?
इन्साँ को आज हम इन्साँ बनाने निकले,
कुछ हम बनने कुछ दुनियाँ बनाने निकले ।

शिशु स्वास्थ्यः शिशु रक्षक टीके

अब अपने मन को करो न दीन
शिशु नहीं अब नियति के अधीन
पहले जन्म के समय पहनाओ शिशु को बी.सी.जी के टीके की जीन
फिर उसके शत्रुओं को करो उसके अधीन।
छः खतरनाक बीमारियों[१] से शिशु तब छुटकारा पाएगा,
जब शिशु राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम अपनाएगा
डेढ से साढ़े तीन माह तक हर माह के अन्तराल पर,
हर बार उसे सुरक्षित रखो टीकों की ढाल पर
उसे बचाओ हर बार बी.सी.जी. के जाल पर
उसे कर दो बार-बार अधीन उजले टीकों की ढाल पर ।
नहीं पहनाओगे उसे टीकों की जीन,
तो तड़फेगा शिशु, बिन पानी ज्यों मीन
कृषक हो जाता है, बिन वर्षा ज्यों दीन
इन्सान हो जाता है, बिन 'पानी' ज्यों हीन,
गलघोटू, काली खांसी टेटनस को ये रोके
डी.पी.टी. के टीके,
शिशु के शत्रुओं को हर कदम पर ये रोके
शिशु रक्षक ये टीके।



डेढ़ माह से ही पोलियों द्रव्य की दो बूंदे
मान कर अमृत पिला दो, शिशु के मुख में
गिर वर्षा की ही दो बूंदे
ज्यों बने मोती, सीप के मुख में
रस द्रव्य को औषधि अब मान लो
अपने भ्रम की इति अब जान लो
विज्ञान के मर्म को अब पहचान लो
भविष्य शिशु का अब सुरक्षित जान लो
शिशु बनेगा सबका सहारा

---

१. 6 खतरनाक बीमारियां हैं :- टेटनस, गल घोंटू , काली खांसी, तपेदिक, पोलियो एवं खसरा

शिशु बनेगा वतन का प्यारा।
ढ़ाई माह में शिशु को दो दूसरा टीका[२] एवं पोलियो की दूसरी खुराक
साढ़े तीन माह में उसे पुनः दो तीसरा टीका[३] एवं पोलियो की तीसरी खुराक
सचेत कर इनकी कच्ची मुखरियों को
समेट कर इनकी सभी पंखुरियों को,
नव माह के भोले-भालों को
अपनाकर खसरे की ढालों को,
मजबूत करना है इनकी सुरक्षा की खालों को।
१२ से १५ माह के बीच, इन्हें सजाना है एम.एम.आर[४] टीके से
ढ़ेर कर शत्रुओं को, ये आगे बढ़ेंगे इसी टीके से
१८ से २४ माह तक इन्हें दिखानी है पहली दूरबीन
यह है डी.पी.टी. की पहली बूस्टर व पोलियो की जीन
इससे इन सेनानियों की शत्रु सेना बनेगी दीन ।
बढ़ते रहेगें सेनानी बजाकर अपनी बीन।
४५ से ६० माह तक इन्हें दिखानी है दूसरी दूरबीन
यह है डी.पी.टी. की दूसरी बूस्टर व पोलियो द्रव्य की नई जीन
शिशु नहीं जीयेगा अब होकर गमगीन
शत्रु सेना बन जायेगी अब शिशु के अधीन
ये टीके शिशु को तब खिलेंगे,
जब डेढ़ माह से उसे ये निरन्तर लगेंगे
गर अभी से इन नये शस्त्रों के टीके शिशु को मिलेंगे,
तो आगे चलकर शिशु वतन की मिटटी से टीके भरेंगे।
वक्त की आवाज के साथ ये आगे बढ़ते जायेंगे
हर कदम पर जिंदगी के रूप को ये बदलते जायेंगे
अपने शत्रुओं को ये अपने बाजुओं से धकेलेंगे
अपनी धरा को ये अपने लहु से रंग देंगे
दुश्मन को मार कर ये माँ धरती के लाल कहलायेंगे
अपने को, कर कुर्बान ये माँ धरती के भाल कहलायेंगे

❑

२. डी.पी.टी. का टीका ३. वही ४. कनफेड़, खसरा एवं 'रुबेला'

नन्हें -मुन्ने बच्चों की मुस्कराहट से खिलेगा हिन्दुस्तान



नन्हें-मुन्ने बच्चों की हर आहट में,
अब मिलेगा भगवान,
इनकी हर मुस्कराहट से अब खिलेगा हिन्दुस्तान।

इनसे ही यह चमन बनेगा,
इनसे ही यह वतन सजेगा।
भोले-भाले ये वतन के बच्चे,
गोरे-काले ये मन के सच्चे,
इनकी अच्छी सेहत से अब बनेगा हिन्दुस्तान।

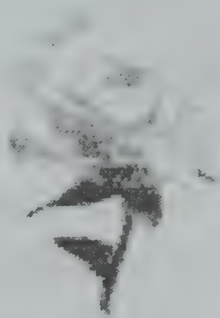
इनमें ही कोई शूर बनेगा,
इनमें ही कोई नूर बनेगा।
इनमें ही है सबके ईमान,
इनमें ही है वतन के अरमान।
इनकी हर मेहनत से अब खिलेगा हिन्दुस्तान।

वतन की तस्वीर है इनकी राहों में,
वतन की रोशनी है इनकी निगाहों में,
वतन के सपने-सलौने हैं, इनके मनों में,
वतन के खेल-खिलौने हैं, इनके नयनों में,
इनकी हर अच्छी नीयत से अब बनेगा हिन्दुस्तान।

उम्मीद का तारा अब चमकेगा,
नजदीक किनारा अब मिलेगा।
हर किसी को अब सहारा मिलेगा,
अब कोई हारा न मिलेगा,
इनकी हर शोहरत से अब खिलेगा हिन्दुस्तान।

विकलांगता

अपाहिजों को बेसहारा न समझो



अपाहिजों को बेसहारा न समझो,
इनके दिलों को हारा न समझो,
समाज के ये हताहत मन,
उलझे से इनके बदन,
सूखे बूटे से इनके तन ,
इनके टूटे मनों को बेसहारा न समझो।

इनमें कोई मेरूह दाद देखो,
इनमें भी कोई मोहब्बत का ताज देखो।
इनके मुकद्दर पर न हंसो,
इनके आंसुओं पर न हंसो।
अपनी नज़र में इनको हारा न समझो।
इनके सूखे लबों पर
काले साये न देखो,
अपने कूचे महलों पर
इनके ढलते दिन के
साये न देखो,
बुझने न पाए इनके दिल इस तरह,
कि चाँद छिप न जाए बादलों में जिस तरह
इनमें से किसी को अब थका हारा न समझो ।

इनका झांक रहा है नया सवेरा,
आँख रहा है आत्म विश्वास का नया फेरा।
लेले के हार फूलों के आएगी बहार,
नज़रें उठाकर हम देखेंगे इन्हें हर बार ।
इनके बुलन्द इरादों को इनके मुक़द्दर में हारा न समझो। ❑

साक्षरता

अब कोई निरक्षर न होगा



अब कोई निरक्षर न होगा
अब हर कोई साक्षर होगा।
बहुत हो चुका है शोषण
किसानों का,

बहुत हो चुका है पोषण
महाजनों का,
अब अंधेरे में आखर होगा,
अब हर कोई साक्षर होगा।

अंगूठा लगाया केवल एक सेर पर,
पर ज़मीदारों ने रंग जमाया सवा सेर पर,
उसमें भी खूंटा लगाया किसानों के केत्त[१] पर
उनके घर उजाड़ दिए अपने फेर[२] पर,
अब निराशा के घेरे में आखर होगा,
अब हर कोई साखर[३] होगा।

❑

---

१. मकान, घर
२. चक्कर, धोखा, झंझर
३. साक्षर

बढ़ती हुई जनसंख्या एवं परिवार नियोजन

कहाँ ले जाएगी बढ़ती हुई आबादी



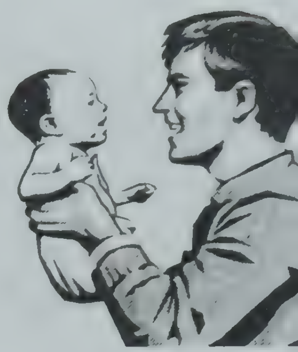
कहाँ ले जाएगी हमें
आज की यह बढ़ती हुई आबादी,
यह हमें वक्त बतलाएगा।
खुशियों से पहले
कोई गम आकर,
हमें सताएगा।

इन्सानों के लिए
सौत है यह आबादी,
हैवानों के लिए
मौत है यह बरबादी,
यह आबादी है या बरबादी,
यह हमें वक्त बतलाएगा।

यह अमीरों के लिए
फुदकती मल्हार है,
यह गरीबों के लिए
लटकती तलवार है।
यह मल्हार है या तलवार है,
यह हमें वक्त समझाएगा।

❑

छोटे-बड़े परिवारों की तस्वीरें



आज बड़े परिवारों ने
क्या से क्या बना दिया?
देकर मकान के माह का राशन
उसे हफ़्ता बना दिया है।

हम दो-हमारे दो के नारे ने,
आज सुखी जीवन का आधार बना दिया है,
किन्तु बड़े परिवारों के नारे ने,
आज दु:खी जीवन को लाचार बना दिया है,

धीरे-धीरे
बड़े परिवार का विचार त्याग कर,
कइयों ने सकून से जीने काअपना
आधार बना लिया है,

धीरे-धीरे
छोटे परिवार का विचार अपना कर,
कइयों ने सुखी समाज का सपना
साकार बना दिया है।

पर्यावरण

हरे-भरे जंगलो के दिल त:र-तार हुए है



हरे-भरे जंगलों के दिल,
किस कद्र तार-तार हुए हैं।
अपने ही हाथों रंगीन मौसम के दिल,
किस कद्र दुश्वार हुए हैं।

खुशहाल ज़िन्दगी को
हमने किस कद्र भुला दिया है।
बेहाल कर मौसमी पत्तों को
हमने किस कद्र रुला दिया है।
इन्सां की करनी के
अब कई भूत उस पर
किस कद्र सवार हुए हैं।
हरे-भरे जंगलों के दिल तार-तार हुए हैं।

इस तरह छूटेगा नाता प्रकृति से,
कि इन्सां तड़फेगा इक दिन,
इस तरह कटेगा उसका नाता वृति से,
कि आस का पंछी उड़ेगा एक दिन,
कंकाल बनेगा इन्सां एक दिन,
सोचकर यह, उसके दिल के टुकड़े
किस कद्र कट कर हज़ार हुए हैं।
हरे-भरे जंगलों के दिल तार-तार हुए हैं।

❑

खता तो जिस किसी ने की पर सज़ा तो हमने पाई



आँधियां जो घिर आई,
सावन पे धार[१] लाई।
पत्तों [२] ने मिटते क्या कहा?
छत्रों [३] ने पिटते क्या कहा?
खता तो जिस किसी ने की,
पर सज़ा तो हमने पाई।

हरे-भरे ये फूल थे,
इन्साँ के हाथों ये झटके थे,
आसमाँ से ज्यों टपके थे
और ज़मीं पर ज्यों अटके थे।
अब ये लुटे दीवाने फूल से,
अब से टूटे परवाने अपने मूल से,
दीवानों ने मिटते क्या कहा?
परवानों ने लुटते क्या कहा?
खता तो जिस किसी ने की,
पर सज़ा तो हमने पाई।

अब जल गया है,
इन के सब्र का खिर्मन,
इन्साँ खुद ही बन गया है,
अपनी जिन्दगी का दुश्मन,
अपनी तमाम खुशियाँ
और अपनी तमाम राशियाँ
अपने ही हाथों से लुटा कर,

---

१. आक्रमण

२. पत्ते

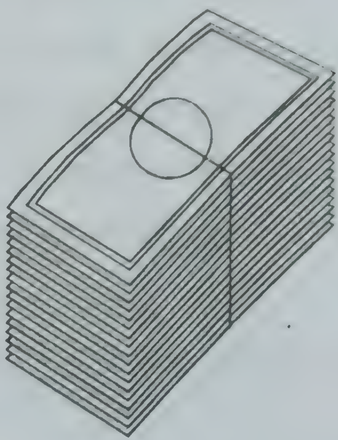
३. पेड़

अपनी नाकाम हसरतें मिटा कर,
खुद ही अपनी शक्ल का,
साया सा तलाश करता है,
वह खुद ही अपनी मंद अक्ल का
हम साया सा तलाश करता है।
पत्तों के साया क्या कहते हैं ?
छत्रों के हम साया क्या कहते हैं ?
खता तो जिस किसी ने की
पर सज़ा तो हमने पाई।

❑

अल्प-बचत

अल्प-बचत हर मुश्किल को आसान करती है



जो अबसे बचाएगा,
वह आगे फल पाएगा,
वरना आगे चलकर,
कोई हाथ मलकर रह जाएगा।
कण-कण बन कर मण बनता है,
बूँद-बूँद से सागर,
क्षण-क्षण बनकर समय बनता है,
पण-पण से गागर।
अब भामाशाह का ही कोई गागर
किसी संकट में काम आएगा।

अल्प बचत हर मुश्किल को, आसान करती है,
यह हर वक्त हर शक्ल को, किसी अक़्ल में बदल कर,
उसका मान करती है।

अब बचत का ही कोई नागर[१]
किसी संकट में काम आएगा।

भूल जाओ सदियों पुरानी
सेठ-साहूकार-महाजन की कुण्डी
जिसमें पिस जाती थी
किसान-मजदूर-लाचार व्यक्ति की मुण्डी
अब बचत के नये-नये तरीके अपनाओ
अपने बच्चों के खातिर नये-नये नुस्के आजमाओ
छोटी-छोटी बचत का ही कोई तालाब किसी बड़े
सागर में बदल जायेगा।

गरीब से गरीब भी खरीद ले
राष्ट्रीय बचत पत्र या किसान विकास पत्र के यंत्र

१. भला आदमी, चतुर शिष्ट व्यक्ति, सभ्य

या फिर बजा ले अपनी मन की बीन से
एल.आई.सी. या बैंक की एफ.डी.आर. के तंत्र मंत्र
या फिर अपना लो शिशु का 'सहारा'[२] मंत्र
हर बचत का सफर
संकट मोचक बनकर
आपको बचाएगा

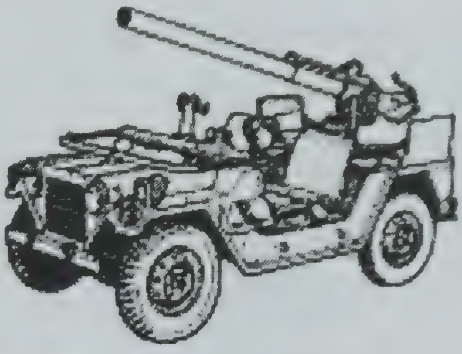
बिटिया है राम-रहीम़ की,
दोनों ही रहे आबाद,
बिटिया गिरजे-गुरुद्वारे की
दोनों ही रहे नाबाद,
हर बगिया में आज़ाद वतन के फूल खिले,
हर बगिया को खुशहाल चमन की कली मिले।
तभी हिन्दुस्तान का हर भामाशाह,
किसी संकट में आतंकी ढेरों को मिटाने में काम आयेगा।

❑

२. "सहारा इण्डिया"

आतंकवाद

रेत के धोरों पर हथियारों की खोज चल रही है



रेत के धोरों पर,
हथियारों की खोज चल रही है,
खेत के छोरों पर,
यारों की खोज चल रही है।

पहले थी एक ज़मीं
एक था आसमां,
फिर कहीं से धूल उड़ी, बनी आँधियों की दास्तां,
अब उसी दास्तां के हथोड़ों पर,
थके-हारों की खोज चल रही है।

कितने लोग हवालात में
लिए गए?
कितने तहकीकात के ब ाद
छोड़ दिए गए?
अब चारों कोनों पर,
बेसहारों की खोज चल रही है।

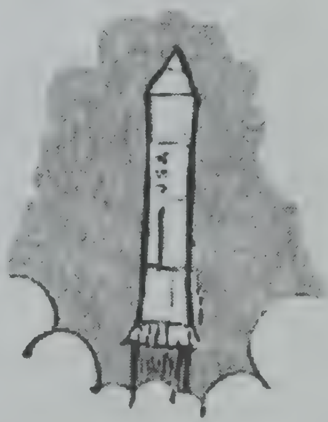
कितने नशेमन[१] खेत रहे
इन हथियारों की खोज में?
अब कोरी आस्था के जोरों पर
कोरे नारों की खोज चल रही है।

❑

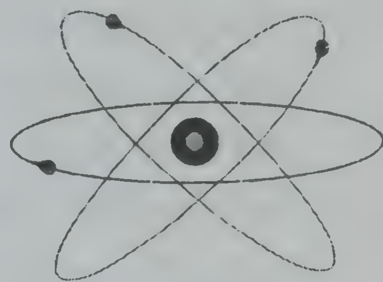
१. घोंसले

आणविक शक्ति

बनाकर एटम बम क्यों हमें रुलाते हैं



नई दुनिया[१] के ये लोग
क्या-क्या गुल खिलाते हैं ?
बना कर एटम बम ये लोग
क्यों हमें रुलाते हैं?



अब ये देते हैं शांति का नारा,
जो है हमारा सदियों पुराना,
सी.आई.ए. का पहले कहाँ गया यह नारा ?
जब हिरोशिमा का डूबा था सितारा।
नागासाकी की कब्रो को अब ये लोग
क्यों रूलाते हैं ?
परमाणु अप्रसार की ओट में
अब ये क्या चाहते हैं ?
अणु प्रसाद देकर भारत की जोत में,
खुद क्यों अपने आप को सम्पन्न बनाना चाहते हैं ?
लाशों के ढेरों को अब ये लोग
क्यों किनारों पर लाकर बहलाते हैं ?

❑

१. 1823 में अमेरिकन राष्ट्रपति मुनरो ने 'मुनरो सिद्धांत' प्रतिपादित करते हुए जहाँ अमरिकन को नई दुनियाँ घोषित किया था वहीं यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था को चेतावनी देते हुए कहा था कि अर्जेंटाइना, चिल्ली, मैक्सिको में यदि यूरोपीय व्यवस्था के देश हस्तक्षेप करेंगे तो वो उनका उत्तर तलवार से देंगे। स्त्रोतः नोंविन्सन एण्ड कोमेगर, अमरीका का इतिहास।

भावात्मक एकत्व

बना लो अपना आशियाँ सबके मनों को जोड़कर



चलो चलते हैं वहाँ,
जहाँ मिलते हों जमीं–आसमाँ
मन मिलते हो जहाँ,
वहीं बना लेते हैं कोई दास्ताँ।

उम्मीद पर टिका है
यहीं–कहीं कोई तारा,
नजदीक है अरमानों का
यहीं–कहीं कोई किनारा,
दिल मिलते हो जहाँ,
वहीं बसा लेते हैं कोई आसमाँ।

अब तो अरमां बदलेगा
और हम लेंगे करवटें,
और मिट जाएगी सिलवटें
बेगैरत परेशानी हो न जहाँ
वहीं बना लेते हैं कोई आशियाँ ।

कुर्बान वतन पर हम होंगे
रूसवां न कोई गम होंगे
इन्सां–इन्सां के हम सफर होंगे
दहेज के कड़वे घूँट हो न जहाँ,
वहीं बना लेते हैं कोई अपनी दास्तां।

❑

खोल दो यह शहर गम के वीरानों से



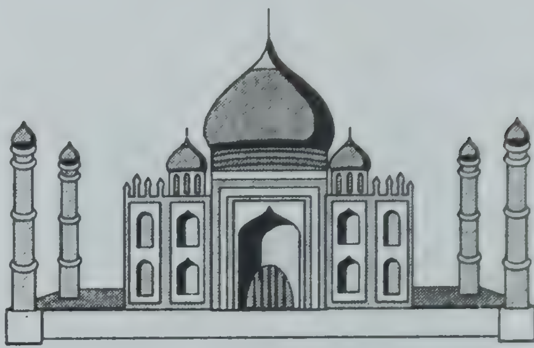
खोल दो यह शहर
गम के वीरानों से,
सोंख लो यह जहर
गम के पैमानों से।

सुखा दो अपने घाव
जरा सी हवा के चलने से,
भुला दो अपने भेदभाव,
हर किसी की वफ़ा के रहने से।

ज़हरे गम का नशा
मिटा दो अपनी चाह से,
नफरते-कातिल का नशा
मिटा दो अपनी राह से।
धरती पर झुका दो
बादलों के सपनों को,
जोड़ दो निर्बल तंग से मनों को,
जोड़ दो मजबूत धागे से अपने अनमनों को।

❑

इन्सानियत है सबकी जात



कैसे जिग़र में समां है,
इन्साँ के घर में समाँ है।
ईश्वर तो मन में समाँ है,
सांसों के तन में समाँ है।
इन्सान जिधर से आया है
हर रास्ता उधर से पाया है,
मानो तो कोई अपना है
जानो तो सपनों का भारत अपना है।
ईश्वर मन्दिर के बाहर भी रहता है
साफ दिल में सजा गुलशन ही महकता है।
इन्सान बेबस सा यहाँ क्यों रोता है ?
अपने दाग़ जिग़र के वह यहाँ क्यों धोता है?
हर सच्चे व्यक्ति के मन में ईश्वर रहता है
हर बच्चे के मन में ईश्वर सज़ता है,
उसे उजले मन से ही देखो
उसे उलझन के मन से न देखो।
मानो या न मानो, पर है सच्ची बात
जानो या न जानो, पर इन्सानियत है सच्ची बात।

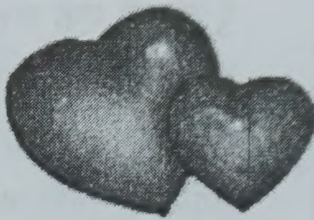
मानव न जाति, न धर्म, न भाषा न प्रान्त है



दु:ख की एक कहानी
वही सुनाने जा रहा हूँ,
सुख की छाया भी आनी-जानी
सही राह सुनाने जा रहा हूँ।
सुनलो उन बातों को
जो मन में भा जाएँ,
चुनलो उन रास्तों को,
जो मन में समा जाएँ।
मानव न जाति, न धर्म
न भाषा, न प्रान्त है,
मानव केवल मानव है।
फिर जाति के तार
क्यों बुनते हैं मनों पर,
फिर धर्म के वार
क्यों सुनते हैं दिलों पर ?
यह कैसी है रूसवाई की कहानी ?
क्यों हर मन में है जंगल सी वीरानी
जुदा-जुदा भाषा-रंग सब हैं हमारे,
पर वतन एक है।
जुदा-जुदा प्रान्त, संग साथ हैं हमारे,
पर चमन एक है।
भाषा-रंग के नाम पर,
हर बार क्यों बनाते हो नई कहानी ?
आशा-उमंग के नाम पर,
हर बार क्यों सुनाते हो तानाशाही की जुबानी ?

❑

मन का पंछी कहीं उड़ न जाए



कहीं शाम यूँ ही ढल न जाए?
मन का पंछी कहीं उड़ न जाए?

रात ढले और दिन ढलते हैं,
ढलते हैं नभ के तारे,
इक दिन सबको ढलना है,
फिर क्यों ना जीवन सुधारें ?

टूटे मन कब जुड़े हैं सारे ?
टूटने लगे हैं मन के तारे,
इक दिन सबको टूटना है,
फिर क्यों ना मन को मारें ?

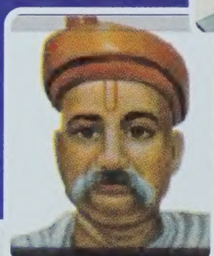
नीले नभ का हर ये मोती,
काले मन का ज़हर ये बोती,
इक दिन अमृत लाना है,
फिर क्यों ना विष को त्यागें ?



डॉ. हरि जे. मंगलानी









RCP
रुकमणी कैरियर पब्लिकेशन्स
53/139, वी.टी. रोड, मानसरोवर, जयपुर।
मो. 9352966274